Lyceum India Journal of Social Sciences || ISSN: 3048-6513 (Online)
Volume: 2 Issue: 5 || October 2025 || DOI: 10.5281/zenodo.19295269

# महिला सशक्तिकरण : सामाजिक एवं आर्थिक विकास की आधारशिला

**डॉ. अंबिका शर्मा**[1]

**प्रस्तावना–:**

महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा शैक्षिक रूप से इतना सक्षम बनाना है कि वे अपने जीवन से संबंधित निर्णय स्वयं ले सकें और समाज में पुरुषों के समान अधिकार एवं अवसर प्राप्त कर सकें। किसी भी राष्ट्र का समग्र विकास तब तक संभव नहीं है जब तक उसकी आधी आबादी अर्थात् महिलाएँ विकास प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी न निभाएँ। भारत में महिलाओं की स्थिति समय-समय पर बदलती रही है। वैदिक काल में महिलाओं को सम्मानजनक स्थान प्राप्त था, किन्तु मध्यकाल में उनकी स्थिति में गिरावट आई। आधुनिक भारत में शिक्षा, तकनीकी प्रगति, संवैधानिक अधिकारों तथा सरकारी योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने के अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। आज महिला सशक्तिकरण केवल एक सामाजिक आवश्यकता नहीं, बल्कि आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना के लिए भी अनिवार्य है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा निर्धारित सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) में भी लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को विशेष महत्व दिया गया है।महिला सशक्तिकरण का अर्थ एवं अवधारणा महिला सशक्तिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से महिलाओं को अपने जीवन, संसाधनों और अवसरों पर नियंत्रण प्राप्त होता है। इसका उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और निर्णय लेने में सक्षम बनाना है। महिला सशक्तिकरण केवल अधिकार प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया भी है।

**सार बिंदु–:** रोजगार,सशक्तिकरण,  आत्मनिर्भर।,गतिमान,अवसर।

**महिला सशक्तिकरण : सामाजिक एवं आर्थिक विकास की आधारशिला–:**

एक राष्ट्र की आर्थिक शक्ति उसकी महिलाओं और बच्चों के कल्याण, शिक्षा और सहभागिता से गहराई से जुड़ी होती है। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और कानूनी क्षेत्रों में समान अवसर प्रदान करना, ताकि वे अपने जीवन के फैसले स्वयं ले सकें। सामाजिक विकास में महिला सशक्तिकरण का महत्व अत्यंत महसूस किया जाता है। शिक्षित और सशक्त महिलाएं अपने बच्चों की पोषण, स्वास्थ्य और शिक्षा में बेहतर योगदान देती हैं। यह पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण के प्रति समाज को जागरूक करता है और जेंडर समानता को बढ़ावा देता है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसी योजनाओं ने जन्म के समय लिंगानुपात को 918 से 930 तक बढ़ाया है।

आर्थिक विकास में महिला सशक्तिकरण का महत्व भी बहुत बड़ा है। सशक्त महिलाएं कार्यबल में सक्रिय भागीदारी कर राष्ट्रीय विकास में समान हितधारक बनती हैं। भारतीय संविधान जेंडर समानता का सिद्धांत प्रतिपादित करता है और महिलाओं को समानता का दर्जा प्रदान करता है। मिशन शक्ति जैसे कार्यक्रमों ने 10.61 लाख महिलाओं की वन स्टॉप सेंटर के माध्यम से सहायता की है।

[1] सहायक प्राध्यापक, स्वामी रामप्रकाश डिग्री कॉलेज, मुरहास कन्हैया, फर्रुखाबाद

विकसित भारत की कल्पना 2047 तक कार्यबल में महिलाओं की 70% भागीदारी सुनिश्चित करना चाहती है। महिला सशक्तिकरण न केवल व्यक्तिगत क्षमता को बढ़ाता है, लेकिन सामाजिक प्रगति में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह एक राष्ट्र के समग्र विकास की नींव है और सामाजिक व आर्थिक प्रगति की आधारशिला कहलाती है।

**महिला सशक्तिकरण के प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैं—**

शैक्षिक सशक्तिकरण – महिलाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना।

आर्थिक सशक्तिकरण – रोजगार, स्वरोजगार एवं वित्तीय स्वतंत्रता प्रदान करना।

सामाजिक सशक्तिकरण – लैंगिक भेदभाव, हिंसा और रूढ़िवादिता से मुक्ति।

राजनीतिक सशक्तिकरण – शासन और निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी।

कानूनी सशक्तिकरण – महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा और न्याय तक पहुँच।

**महिला सशक्तिकरण का महत्व–:**

**1. आर्थिक विकास में योगदान :** महिलाएँ किसी भी देश की कार्यशील जनसंख्या का महत्वपूर्ण भाग होती हैं। जब महिलाएँ शिक्षा और रोजगार प्राप्त करती हैं, तो उनकी उत्पादकता बढ़ती है और राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है। विश्व बैंक के अनुसार महिलाओं की श्रम भागीदारी बढ़ने से आर्थिक विकास को गति मिलती है।

**2. सामाजिक विकास:** शिक्षित और सशक्त महिला अपने परिवार के स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण स्तर को बेहतर बनाती है। इससे संपूर्ण समाज का विकास होता है।

**3. गरीबी उन्मूलन:** महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता परिवार की आय बढ़ाती है, जिससे गरीबी कम होती है। स्वयं सहायता समूह (SHGs) और सूक्ष्म वित्त योजनाएँ इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

**4. लैंगिक समानता की स्थापना:** महिला सशक्तिकरण समाज में समान अवसर और समान अधिकार सुनिश्चित करता है। इससे महिलाओं के प्रति भेदभाव और हिंसा में कमी आती है।

**5. लोकतांत्रिक विकास:** महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी लोकतंत्र को अधिक समावेशी और प्रभावी बनाती है। पंचायतों एवं स्थानीय निकायों में महिलाओं के आरक्षण ने नेतृत्व क्षमता को बढ़ावा दिया है।

**भारत में महिला सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति**

भारत में महिला सशक्तिकरण की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। महिलाओं ने शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, खेल, प्रशासन और व्यवसाय के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं

### शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति

स्वतंत्रता के समय महिलाओं की साक्षरता दर बहुत कम थी, जबकि आज इसमें उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" जैसी योजनाओं ने बालिका शिक्षा को बढ़ावा दिया है।

### राजनीतिक भागीदारी

पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण ने लाखों महिलाओं को नेतृत्व का अवसर प्रदान किया है। हाल ही में संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के आरक्षण संबंधी कदम भी महिला राजनीतिक सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण हैं।

### आर्थिक भागीदारी

महिलाएँ बैंकिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि तथा उद्यमिता के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। स्टार्टअप संस्कृति में भी महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है।

### सामाजिक जागरूकता

महिला अधिकारों, लैंगिक समानता और घरेलू हिंसा के विरुद्ध जागरूकता में वृद्धि हुई है। सोशल मीडिया और डिजिटल तकनीक ने महिलाओं को अपनी आवाज उठाने का मंच प्रदान किया है।

### महिला सशक्तिकरण हेतु सरकारी पहल–:

भारत सरकार द्वारा महिलाओं के विकास एवं सशक्तिकरण के लिए अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही हैं।

1. **बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ:** इस योजना का उद्देश्य बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना तथा लिंगानुपात में सुधार करना है।
2. **प्रधानमंत्री मुद्रा योजना:** इस योजना के माध्यम से महिलाओं को स्वरोजगार हेतु ऋण उपलब्ध कराया जाता है।
3. **राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन:** महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों को आर्थिक सहायता और प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।
4. **सुकन्या समृद्धि योजना:** बालिकाओं के भविष्य को सुरक्षित बनाने हेतु बचत योजना।
5. **प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना:** ग्रामीण महिलाओं को स्वच्छ ईंधन उपलब्ध कराकर उनके स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार किया गया है।

### महिला सशक्तिकरण की चुनौतियाँ–;

यद्यपि भारत में महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है, फिर भी अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं।

1. **लैंगिक भेदभाव:** समाज के अनेक क्षेत्रों में महिलाओं को अभी भी पुरुषों की तुलना में कम अवसर प्राप्त होते हैं।

2. **शिक्षा में असमानता:** ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक बालिकाएँ आर्थिक और सामाजिक कारणों से शिक्षा से वंचित रह जाती हैं।
3. **महिला हिंसा :** घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, यौन उत्पीड़न तथा मानव तस्करी जैसी समस्याएँ महिलाओं की स्वतंत्रता को प्रभावित करती हैं।
4. **आर्थिक निर्भरता:** अनेक महिलाएँ अभी भी आर्थिक रूप से परिवार के अन्य सदस्यों पर निर्भर हैं।
5. **स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ:** कुपोषण, मातृ मृत्यु दर तथा स्वास्थ्य सेवाओं की कमी महिलाओं के विकास में बाधक हैं।
6. **डिजिटल विभाजन:** ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल संसाधनों और तकनीकी शिक्षा की कमी महिलाओं की प्रगति को सीमित करती है।

## महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास–:

महिला सशक्तिकरण का आर्थिक विकास से सीधा संबंध है। जब महिलाएँ कार्यबल में शामिल होती हैं, तो उत्पादन, आय और उपभोग में वृद्धि होती है। महिला उद्यमिता रोजगार सृजन और नवाचार को प्रोत्साहित करती है

1- स्वयं सहायता समूहों (Self Help Groups) ने ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया है।
2- कृषि, डेयरी, हस्तशिल्प तथा लघु उद्योगों में महिलाओं की सक्रिय
3- भागीदारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बना रही है।
4- अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों से स्पष्ट है कि जिन देशों में महिलाओं की श्रम भागीदारी अधिक होती है, वहाँ आर्थिक विकास की गति भी अधिक होती है।
5- इसलिए महिला सशक्तिकरण केवल सामाजिक न्याय का विषय नहीं, बल्कि आर्थिक विकास की रणनीति भी है।

## महिला सशक्तिकरण के लिए आवश्यक उपाय

1- महिलाओं की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित की जाए।
2- कौशल विकास और व्यावसायिक प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया जाए।
3- महिलाओं को रोजगार एवं उद्यमिता के अवसर उपलब्ध कराए जाएँ।
4- लैंगिक समानता के प्रति सामाजिक जागरूकता बढ़ाई जाए।
5- महिलाओं की सुरक्षा हेतु कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए।
6- डिजिटल साक्षरता को प्रोत्साहित किया जाए।
7- स्वास्थ्य एवं पोषण सेवाओं की पहुँच बढ़ाई जाए।
8- राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई जाए।

## निष्कर्ष–:

महिला सशक्तिकरण किसी भी राष्ट्र के समावेशी और सतत विकास का मूल आधार है। यह केवल महिलाओं के अधिकारों की रक्षा का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, आर्थिक प्रगति और लोकतांत्रिक सुदृढ़ीकरण का महत्वपूर्ण माध्यम है। भारत में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, राजनीति तथा सामाजिक जागरूकता के क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति में

उल्लेखनीय सुधार हुआ है, किन्तु अभी भी लैंगिक असमानता, हिंसा, आर्थिक निर्भरता और सामाजिक रूढ़ियों जैसी चुनौतियाँ विद्यमान हैं। महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य तथा निर्णय प्रक्रिया में समान अवसर प्रदान करके ही वास्तविक सशक्तिकरण संभव है। जब महिलाएँ आत्मनिर्भर और सक्षम बनेंगी, तब परिवार, समाज और राष्ट्र सभी स्तरों पर विकास की गति तेज होगी। इसलिए महिला सशक्तिकरण को केवल सरकारी कार्यक्रमों तक सीमित न रखकर सामाजिक आंदोलन का रूप देना आवश्यक है। एक सशक्त महिला ही सशक्त परिवार, सशक्त समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकती है।

**संदर्भ (References):**

1-भारत सरकार महिला एवं बाल विकास मंत्रालय। महिला सशक्तिकरण एवं कल्याण संबंधी रिपोर्टें।

2-नीति आयोग। सतत विकास लक्ष्य एवं लैंगिक समानता रिपोर्ट।

3-राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय। महिला एवं पुरुष संबंधी सांख्यिकीय रिपोर्ट।

4-विश्व बैंक। Women, Business and the Law Reports।

5-संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम। Human Development Reports।

6-संयुक्त राष्ट्र महिला संगठन। Gender

7-Equality and Women's Empowerment Reports.

8-अग्रवाल, ए.एन. भारतीय अर्थव्यवस्था। न्यू एज इंटरनेशनल।

9-दत्त, रुद्र एवं सुंदरम, के.पी.एम. भारतीय अर्थव्यवस्था। एस. चाँद एंड कंपनी।

10मिश्रा एवं पुरी। भारतीय अर्थव्यवस्था। हिमालय पब्लिशिंग हाउस।

11शर्मा, आर.सी. महिला अध्ययन एवं महिला सशक्तिकरण। जयपुर प्रकाशन।

**Publisher’s Note:** *The views and opinions expressed in this article are those of the author(s) and do not necessarily reflect the official policy or position of the publisher or editorial board. The publisher assumes no responsibility for any consequences arising from the use of information contained herein.*

**Citation in APA 7th Edition:** शर्मा, . अंबिका . (2025). महिला सशक्तिकरण : सामाजिक एवं आर्थिक विकास की आधारशिला. Lyceum India Journal of Social Sciences, 3(4), 133–137. https://doi.org/10.5281/zenodo.19295269